IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जयपुर महानगर : नगरीय जनसंख्या वृद्धि का कालिक (1901–2011) विश्लेषण

[1]हरि सिंह गुर्जर, [2]डॉ. पूर्णिमा सिंह Corresponding Author

[1]शोधार्थी, [2]सहायक आचार्य

[1]भूगोल विभाग मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,उदयपुर,राजस्थान(भारत)

[2]भूगोल विभाग मीरा कन्या महाविद्यालय,उदयपुर,राजस्थान (भारत)

सारांश (Abstract)

20वीं शताब्दी में तीव्र वृद्धि दर से बढ़ती जनसंख्या व नगरीकरण में वृद्धि हुई, जिससें बड़े शहरों का निर्माण हुआ इसी क्रम में जयपुर शहर का निर्माण हुआ। इस पेपर में द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से नगरीय जनसंख्या का जनगणना वर्ष के आधार पर विश्लेषण किया गया हैं। वर्ष 1901 से 2011 के बीच में नगरीय जनसंख्या में 1941 तक धीरे धीरे वृद्धि होती हैं फिर स्वतंत्रता वाले दशक(1951) में तेजी से नगरीय जनसंख्या में वृद्धि होती हैं, जो अभी तक सर्वाधिक वृद्धि दर हैं। बढ़ती नगरीय जनसंख्या से शहरी जीवन अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो गया हैं जो हर बड़े शहर की समस्या हैं इन समस्याओं को कम करने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्लान व नीतियों का निर्माण किया जा रहा हैं।

प्रमुख शब्द– जनसंख्या, नगरीकरण, जनगणना, दशक, प्लान व नीतियों, शहरी जीवन

परिचय (Introduction)

भारतीय जनगणना विभाग ने भारतीय नगरों को 6 श्रेणियों में विभक्त किया है। राजस्थान में प्रथम श्रेणी के नगरों की संख्या 30 हैं। प्रथम श्रेणी के नगर संकुलनो में से नगर संकुलन जिनकी आबादी 1 मिलियन या उससे अधिक है, वे महानगरों की श्रेणी में आते हैं। विश्व स्तर पर महानगरों के लिए कोई न्यूनतम जनसंख्या की स्पष्ट सीमा नहीं है परंतु सामान्यतः 10 लाख या इससे अधिक जनसंख्या वाले नगरों को ही महानगर (मेट्रोपोलिस) या मिलियन सिटी कहा जाता है। महानगरों के विकास में जनसंख्या के साथ–साथ आर्थिक क्रियाएं व प्रादेशिक स्तर के कार्यों का जमाव भी आवश्यक है। राजस्थान में महानगरों की संख्या जनगणना 2001 में 1 से बढ़कर जनगणना 2011 में 3 हो गई (जयपुर, जोधपुर कोटा) जिसमें राज्य की कुल नगरीय जनसंख्या का 30.42 प्रतिशत निवास करती हैं।

शोध प्रविधि (Methodology)

यह अध्ययन मुख्य रूप से जयपुर की जनसंख्या वृद्धि व नगरीकरण पर केंद्रित हैं। सभी आंकड़े केंद्र व राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन, पत्र–पत्रिका, राजस्थान जनसंख्या कार्यालय, शोध पत्र, शोध प्रबंध, प्रमुख पुस्तक, समाचार पत्रों और लेखों से द्वितीयक आंकड़े लिए गए हैं। इनके विश्लेषण हेतु मात्रात्मक और वर्णनात्मक विधियों कि सहायता से मानचित्र–आरेख, सारणीयां एवं ग्राफ का प्रयोग किया गया हैं। इस अध्ययन की सारी जानकारी एकल और विश्लेषक की गई हैं।

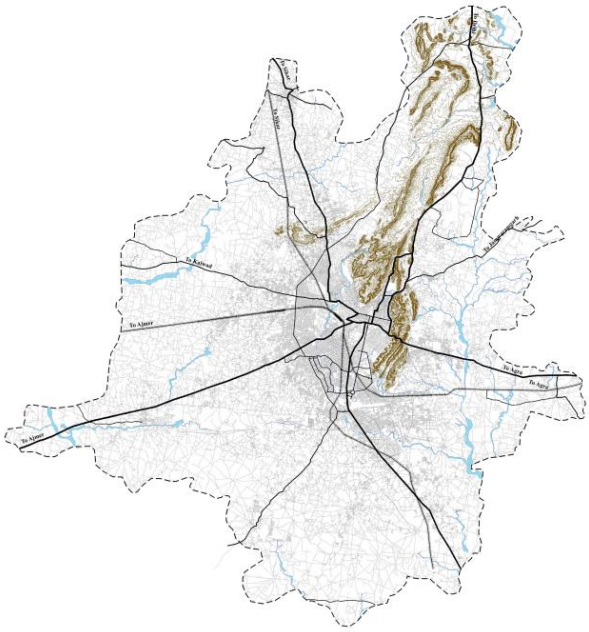

चित्र – जयपुर शहर

अध्ययन क्षेत्र (Study area) - जयपुर शहर

जयपुर राजस्थान राज्य की राजधानी के साथ राज्य का प्रमुख ऐतिहासिक,औद्योगिक,पर्यटन नगर है। दोनों ओर अरावली पर्वत माला से घीरे जयपुर नगर की स्थापना 18 नवंबर 1727 को महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा प्रसिद्ध बंगाली वास्तुशिल्पी विद्याधर भट्टाचार्य के निर्देशन में 90 डिग्री कोण सिद्धांत पर करवाया गया। जयपुर नरेश सवाई रामसिंह द्वितीय (1835–1880) द्वारा जयपुर के सभी इमारतों पर 1863 में प्रिंस अल्बर्ट एडवर्ड के जयपुर आगमन पर गुलाबी रंग करवाया तथा तब से जयपुर गुलाबी नगर कहलाने लगा व जयपुर शहर का पुराना नाम जयनगर है। 5 जुलाई 2019 को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी का दर्जा प्राप्त किया।

जयपुर शहर की 1901 की जनगणना अनुसार 160167 नगरीय जनसंख्या थी। 2011 में नगरीय जनसंख्या 3046163 हो गई। 2021 व 2035 में क्रमशः 400800, 5502000 होने का अनुमान है। बढ़ता प्रशासनिक कार्य भार व नागरिकों की समस्याओं को देखते हुए जयपुर नगर निगम को दो भागों में विभक्त किया गया (नगर निगम हेरिटेज, नगर निगम ग्रेटर) जिसमें क्रमशः 100,150 वार्डो का गठन किया गया है।

अवस्थिति (location)

जयपुर 26 डिग्री 55 मिनट उत्तरी अक्षांश और 75 डिग्री 49 मिनट पूर्वी देशांतर पर स्थित है। इसकी नगरीय सीमा 26 डिग्री 46 मिनट उत्तरी अक्षांश से 27 डिग्री 01 मिनट उत्तरी अक्षांश और 75 डिग्री□37 मिनट पूर्वी देशांतर से 76 डिग्री□57 मिनट तक फैली हुई हैं।

यह शहर उत्तर में नाहरगढ़ पहाड़ियों और पूर्व में झालाना से घिरा हुआ है, जो अरावली पहाड़ियों का एक हिस्सा है। शहर के दक्षिण और पश्चिम में भी प्रचलित पहाड़ियाँ हैं लेकिन वे अलग–थलग हैं और गठन में असंतुलित हैं। शहर का दक्षिणी छोर मैदान के लिए खुला है और सांगानेर और उससे आगे की ओर दूर–दूर तक फैला हुआ हैं। शहर का भावी विस्तार दक्षिण और पश्चिम में पश्चिम में अमानी शाह नाला और पूर्व और उससे आगे जवाहर नगर नाला के संगम क्षेत्र में बने जलोढ़ मैदानों पर हुआ।

सारणी 1– जयपुर शहर की 2011 की जनगणना के अनुसार जनांकिकी विशेषताएँ

कुल जनसंख्या	3046163
महिला जनसंख्या	1443038
पुरुष जनसंख्या	1603125
क्षेत्रफल	484.64 वर्ग किमी.
घनत्व	6285
साक्षरता	83.30
अनुसूचित जाति	12.88
अनुसूचित जनजाति	3.78
लिंगानुपात (0–6आयु वर्ग)	855

स्त्रोत –जिला जनगणना हैडबुक सीरीज –09, भाग12इ 2011

चार्ट –1 जयपुर शहर की जनसंख्या वृद्धि दर प्रतिशत में (2001–2011)

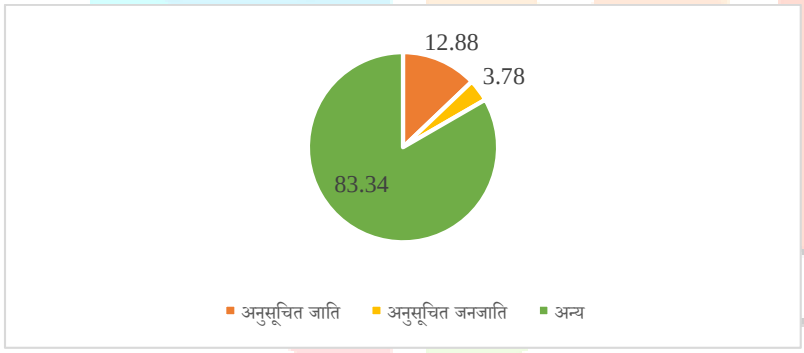

स्त्रोत –जिला जनगणना हैडबुक सीरीज –09, भाग12इ 2011

नगरीकरण के कारक

- ☐ नगरीय सुख सुविधाएं (परिवहन, शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन)
- ☐ जीवकोपार्जन के केन्द्र व रोजगार की अधिक संभावनायये
- ☐ उद्योगों का केंद्रीकरण
- ☐ राजनीति के केन्द्र स्थल
- ☐ सुरक्षा की भावना
- ☐ मनोरंजन के केन्द्र

जयपुर शहर की विशेषता– प्रशासनिक व राजधानी नगर

जयपुर शहर स्थापना के बाद से एक प्रशासनिक,आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ हैं। यहां द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र जनसंख्या वृद्धि में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। क्षेत्रों के बीच गतिशीलता और परस्पर निर्भरता के कारण प्रमुख संभावित नगरीय क्षेत्रों के बारे में पता लगाया जा सकता हैं। स्थानीय आधार पर क्षेत्र आधारित विकास पहला तथा स्मार्ट पर्यटन पर केंद्रित अन्वेषणात्मक माध्यम से क्षेत्रीय आर्थिक विकास बढ़ाने के लिए रणनीतियों का प्रस्ताव महत्वपूर्ण हैं Bedi, Prabha. Tripathi. Neha Goel. Singh, R.D.(2019)। यहां राज्य विधानसभा, राजस्थान उच्च न्यायालय की खंडपीठ, सचिवालय और इसके अलावा राज्य के प्रमुख प्रशासनिक कार्यालय स्थित हैं जहां नागरिक प्रतिदिन आवागमन करते हैं। राज्य के प्रमुख प्रशासनिक कर्मचारी व अधिकारीगण सेवानिवृत्ति के पश्चात अधिकतर जयपुर शहर के निवासी हो जाते हैं।

औद्योगिक केंद्र

आधुनिकता के इस युग में बढ़ती जनसंख्या व नगरीकरण में रोजगार एवं सुख सुविधाओं के लिए व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्र से नगरी क्षेत्र की ओर प्रवास कर रहा है जिससे नगरीय जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने के कारण नगरीय क्षेत्र में अनेक समस्याओं जैसें– प्रदूषण,रोजगार,आवास,परिवहन आदि से नगरीय जीवन समस्याग्रस्त हो रहा है। जो वर्तमान समय में राज्य और आस–पास के क्षेत्रों के लिए CBD (central business district) का काम करता हैं।

जयपुर शहर में वैश्विक बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका रखने वाली प्रमुख कंपनियां जैसे– जेनपैक्ट, इंफोसिस, मेटलाइफ,ड्यूशबैंक, न्यूक्लियस सॉफ्टवेयर आदि प्रमुख कंपनियां अपने ऑफिस व इकाईयां स्थापित किए हुए हैं। यहां के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में वीकेआई, झोटवाड़ा, कनकपुरा, सीतापुरा, सांगानेर, मालवीय नगर, औद्योगिक केंद्र के रूप में स्थापित हैं असंगठित औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से सांगानेर शहर और उसके आसपास के इलाकों में केंद्रित हैं।

औद्योगिक पार्क– चमड़ा कॉन्प्लेक्स– मानपुरा माचेरी, जेम्स एंड ज्वैलरी पार्क– सीतापुरा, अपैरल पार्क– जगतपुरा, निर्यात संवर्धन औद्योगिक पार्क– सीतापुरा

पर्यटन केंद्र

गुलाबी नगरी के नाम से प्रसिद्ध जयपुर शहर भारतीय व अंतरराष्ट्रीय पर्यटन केंद्रों में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। यहां प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक आते हैं। यह देश के स्वर्णिम त्रिभुज पर्यटन केंद्र में आता हैं। यहां के प्रमुख पर्यटन केंद्र हवामहल, जलमहल, सिटी पैलेस, आमेर किला, जंतर मंतर, नाहरगढ़ का किला, अल्बर्ट हॉल, जयगढ़ का किला, जयपुर चिड़ियाघर, बिरला मंदिर, गोविंद देव जी मंदिर, जवाहर कला केंद्र, रविंद्र मंच आदि केंद्र पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

परिवहन

जयपुर में जल परिवहन के अलावा यहां सड़क, रेल, मेट्रो रेल व वायु परिवहन की बहुत अच्छी सुविधाएं व विकसित अवस्था में हैं। यहां उत्तर पश्चिम रेलवे जोन का मुख्यालय, सांगानेर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, सिंधी कैंप बस स्टैंड प्रमुख परिवहन के केंद्र के रूप में स्थित हैं तथा यातायात की समस्या को देखते हुए शहर में सिटी परिवहन के लिए सरकार द्वारा जयपुर बस रैपिड ट्रांजिट सर्विस व जयपुर मेट्रो का प्रारंभ किया गया। जयपुर शहर के आवासीय क्षेत्रों में विस्तार की दर बहुत ऊंची हैं। यह पश्चिम व दक्षिण दिशा व राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 48,58,11,52,21,148,53 के समानांतर विस्तारित हो रहा है व शहरी क्षेत्र के आसपास के सेटेलाइट नगरों को कवर कर रहा है जो धीरे–धीरे विकसित हो रहे हैं Singh,Avinash (2019)। शहर में बेहतर बिजली और पानी की आपूर्ति व्यवस्था में सुधार, कचरे का पुनरुपयोग और उचित यातायात व परिवहन प्रबंध प्रणाली जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को निपटाना होगा Shaikh,m.m (2018)।

चिकित्सा

यहां राज्य का सबसे बड़ा सरकारी हॉस्पिटल सवाई मानसिंह हॉस्पिटल हैं। सरकारी व निजी क्षेत्र के अनेक अंतरराष्ट्रीय स्तर के स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल हैं जहां से नागरिकों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं प्राप्त हो रहे हैं।

शिक्षा

1948 में स्थापित महाराजा स्कूल जिसे बाद में महाराजा कॉलेज में बदल दिया गया इसके अलावा महारानी गर्ल्स स्कूल व कॉलेज, राजस्थान विश्वविद्यालय, राधाकृष्णन आयुर्वेद महाविद्यालय, सवाई मानसिंह चिकित्सा महाविद्यालय इसके अलावा निजी क्षेत्र के उच्च स्तरीय विश्वविद्यालय, महाविद्यालय व स्कूलों के स्थापित होने से जयपुर एक शिक्षा नगरी के रूप में प्रमुख स्थान रखता हैं।

चार्ट –2 जयपुर शहर की जनसंख्या वृद्धि दर (2001–2011)

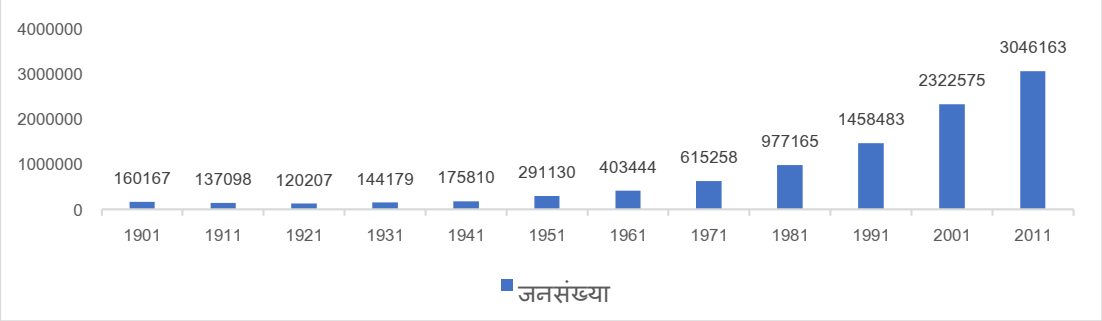

स्त्रोत –जिला जनगणना हैडबुक सीरीज –09, भाग12इ 2011

स्वतंत्रता के बाद जयपुर शहर की जनसंख्या 1901 में 1.60 लाख थी। 1981 में जयपुर शहर राजस्थान का प्रथम दसलाखी नगर(मिलियन सिटी) बनने के नजदीक पहुच गया उस वक्त 9.77 लाख नगरीय जनसंख्या थीं। 21वीं सदी की पहली जनगणना 2001 में यहां की जनसंख्या 23.22 लाख और 2011 की जनगणना में 30.46 लाख जनसंख्या हो गई।

चार्ट –3 जयपुर शहर की जनसंख्या वृद्धि दर (2001–2011)

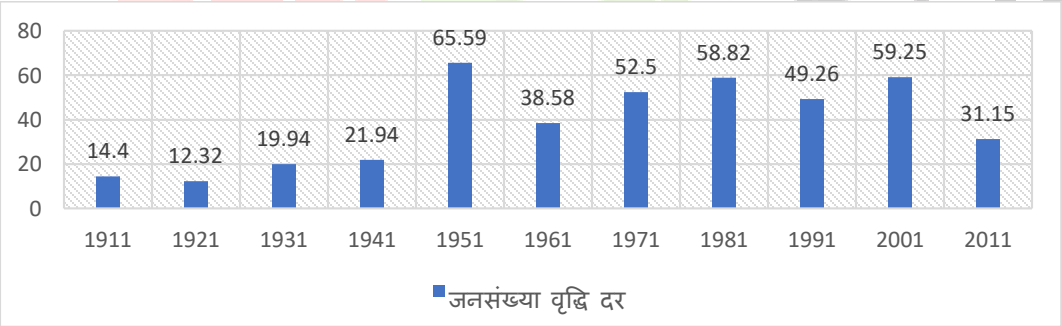

स्त्रोत –जिला जनगणना हैडबुक सीरीज –09, भाग12इ 2011

1901–1911 के दशक में 14.40 प्रतिशत वृद्धि दर से नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई। जयपुर शहर की नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर सर्वाधिक 1941–1951 के दशक में 65.59 प्रतिशत रही। इसके बाद नगरीय वृद्धि दर में 1961 में कमी दर्ज (38.58 प्रतिशत) की गई तथा 1961 से 1981 तक वृद्धि दर्ज की गयी। अंतिम जनगणना 2011 में यहां की दशकीय वृद्धि दर (2001–2011) 31.15 प्रतिशत रही। नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर में उतार–चढ़ाव बहुत देखने को मिलते हैं।

नगरीकरण की समस्या

शहरी आबादी उनके महत्व और आधारभूत सुविधाओं के आधार पर भी तेजी से बढ़ रहा है। शहरी विकास के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों आयाम हैं। शहरी जनसंख्या का विकास कई प्रकार की पर्यावरणीय और सामाजिक समस्याएं पैदा करता हैं। मूल रूप से शहर जनसंख्या विविधता के कारण सभी क्षेत्रों के (धर्म,जाति व संस्कृति) के लोगों को खींचता हैं Bhupendra Saludiya (2014)। जयपुर शहर के भूमि संसाधनों पर जनसंख्या वृद्धि का दबाव हैं। प्रवास, उच्च जनसंख्या घनत्व और असमान जनसंख्या वितरण से शहर में पर्यावरणीय समस्याओं का जन्म हुआ व शहर की जलवायु परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। शहर के केंद्र से बाहर की ओर जनसंख्या घनत्व का दबाव कम रहता हैं R.D.Gurjar (2015)।

- ☐ शहरों में बढ़ती झुग्गी बस्तियाँ
- ☐ प्रमुख रूप से परकोटा (पुराने शहर) में यातायात की समस्या
- ☐ शहर के नए रिहायशी इलाकों में अपराधीकरण की घटनाएँ
- ☐ कचरें का उचित प्रबंधन ना होना
- ☐ पर्यावरणीय चुनौती
- ☐ बढती जनसंख्या के कारण समय पर स्वास्थ्य सुविधायें का अभाव

जयपुर के शहरी क्षेत्र में इस वृद्धि को कई कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसमें ग्रामीण–शहरी प्रवास, शहर की अर्थव्यवस्था का विस्तार और बुनियादी ढांचे का विकास शामिल हैं N. Rathore, A. Bhatnagar & R. Bhargava (2018)। हालांकि, तेजी से विकास ने यातायात की भीड़, प्रदूषण और बुनियादी सुविधाओं के अपर्याप्त प्रावधान जैसी चुनौतियां भी पैदा की हैं N. Soni, A. Tiwari, & M. Gupta, (2018)।

निष्कर्ष (conclusion)

1901 से 2011 तक जयपुर का शहरीकरण विकास महत्वपूर्ण रहा है, और जबकि यह चुनौतियां लेकर आया हैं। जयपुर शहर राजस्थान एकीकरण के बाद राज्य का एक प्रमुख प्रशासनिक,आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ। राज्य का प्रमुख शहर होने के कारण यहां चिकित्सा, परिवहन, औधोगिक क्षेत्रों का विकास हुआ। यहां की जनसंख्या में प्रवासित जनसंख्या के करना तीव्र वृद्धि हुई, जिससें जयपुर शहर धीरें – धीरें महानगर में विकसित हुआ। बढ़ती नगरीय जनसंख्या से शहरी क्षेत्र अधिक जन घनत्व के करना अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो गया हैं, जिससें मानक जीवन स्तर में ह्रास का कहीं ना कहीं कारण बन गया। सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए, राजस्थान सरकार ने जयपुर विकास प्राधिकरण के मास्टर प्लान 2025 (राजस्थान सरकार, 2011) सहित विभिन्न विकास योजनाओं और नीतियों को लागू किया है। इस योजना का उद्देश्य एक स्थायी, न्यायसंगत और समावेशी तरीके से शहर की वृद्धि और विकास का मार्गदर्शन करना हैं। सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयास भविष्य के लिए आशा प्रदान करते हैं।

References

(2011). district census handbook, jaipur. census of india.

(n.d.). Gazette notification of ward delimitation. jaipur: jaipur municipal corporation.

Gurjar, R. (2015). Assessment of impact of urbanization on micro climate in jaipur urban complex based on satellite derived parameters. jaipur: university of rajasthan.

(2011). jaipur development plan 2025. Government of rajasthan.

N. soni, A. t. (2018). Urbanization and Infrastructure Development: A Study of Jaipur City. International Journal of Engineering and Management Research, 8(1), 53-57.

N.rathore, A. b. (2018). Urbanization and Health: A Case Study of Jaipur City. Indian Journal of Public Health Research & Development, 9(12),, 202-207. .

prabha Bedi, N. t. (2019). smart metropolitan regional development economic and spatial design strategies jaipur metropolitan region.

(2015). Rajasthan urban development policy oct.

(2019). seven cultural sites in scribed on . unesco world heritage list.

(2015). some facts about rajasthan page no.18.

State commission on urbanisation report.

state enviroment report.

(2019). statistical yearbook of rajasthan page no.61.

Sheikh, M. M. (2018). Smart city and urban issues: A case study of Jaipur. Annals of Geographical Studies, 1(1), 23-33.

Singh, A. K. (2019). Morphological and demographic characteristics of a planned city: a case study of Jaipur city.

Sarkar, J. (1984). A History of Jaipur: c. 1503-1938. Orient Blackswan.

Chandna, R. C., & Sidhu, M. S. (1980). Introduction to population Geography. Kalyani publishers.

Bhende, A. A., & Kanitkar, T. (1978). Principles of population studies. Bombay: Himalaya Publishing House.

Salodia, B. (2014). Evolution and growth of Jaipur city.